प्रकाशन तिथि : 26 सितम्बर 2017, मूल्य 2 रुपये, वर्ष 36, अंक 3, कुल पृष्ठ 28

ISSN 2454-5163

वीतराग-विज्ञान

(पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट का मुखपत्र)

सम्पादक :
डॉ. हुकमचंद भारिल्ल

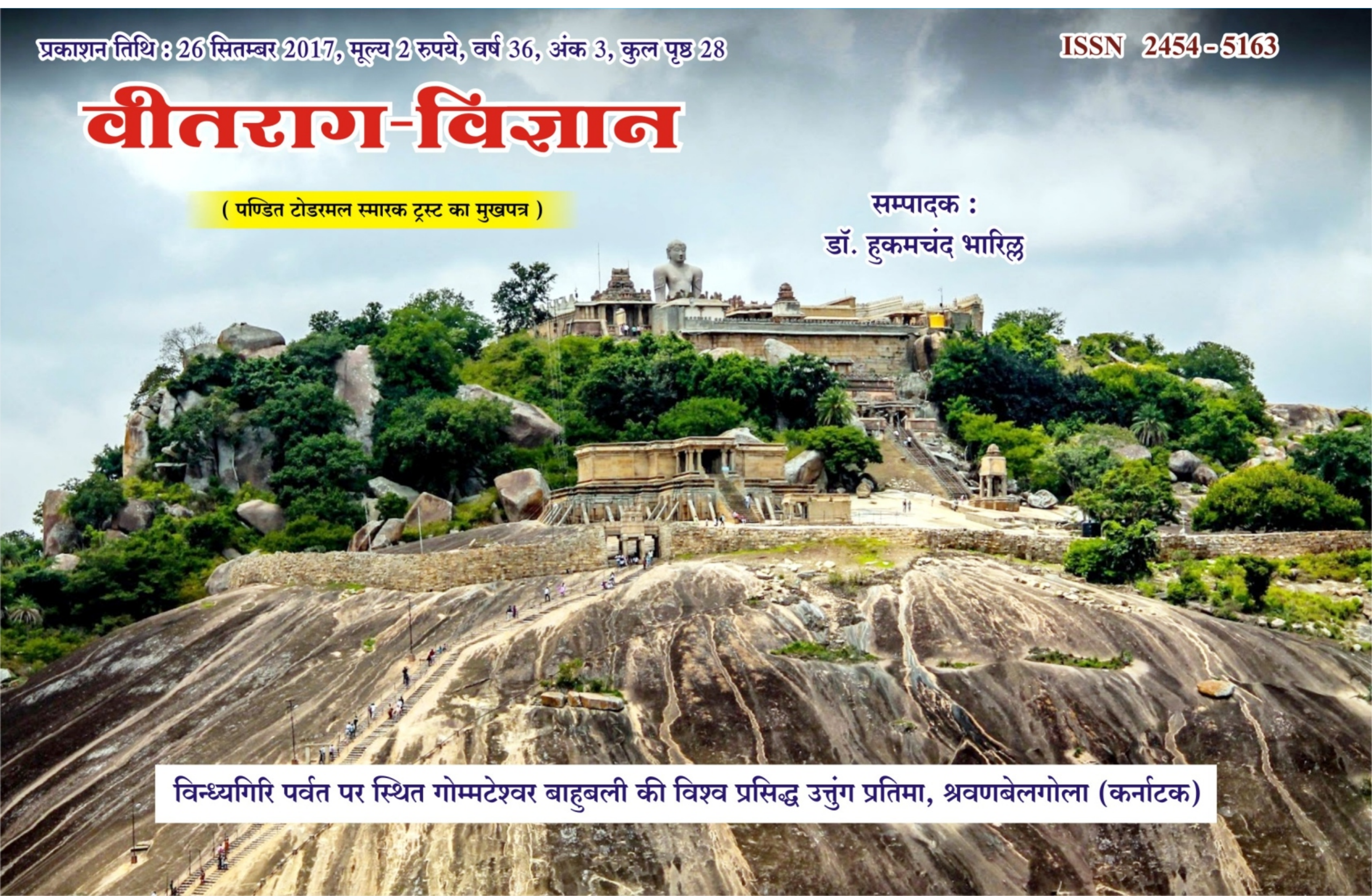

विन्ध्यगिरि पर्वत पर स्थित गोम्मटेश्वर बाहुबली की विश्व प्रसिद्ध उत्तुंग प्रतिमा, श्रवणबेलगोला (कर्नाटक)

वीतराग–विज्ञान (410)

हिन्दी, मराठी व कन्नड़ भाषा में प्रकाशित

जैनसमाज का सर्वाधिक बिक्रीवाला आध्यात्मिक मासिक

सम्पादक :
डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

सह-सम्पादक :
डॉ. संजीवकुमार गोधा

प्रकाशक एवं मुद्रक :
ब्र. यशपाल जैन द्वारा पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट के लिये जयपुर प्रिण्टर्स प्रा. लि., जयपुर से मुद्रित एवं प्रकाशित।

सम्पर्क-सूत्र :
पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट
ए–4, बापूनगर, जयपुर – 302015
फोन :(0141)2705581, 2707458
E-mail : ptstjaipur@yahoo.com

ISSN 2454 - 5163

शुल्क :

आजीवन	:	251 रुपये
वार्षिक	:	25 रुपये
एक प्रति	:	2 रुपये

मुद्रण संख्या :

हिन्दी	:	7200
मराठी	:	2000
कन्नड़	:	1000
कुल	:	10200

कर्तृत्व शक्ति

कर्तृत्व शक्ति राग के आधार से नहीं है; किन्तु आत्मद्रव्य के आधार से है, इसलिये राग कर्त्ता होकर सम्यग्दर्शनादि कार्य नहीं करता, किन्तु आत्मद्रव्य स्वयं कर्त्ता होकर सम्यग्दर्शनादि कार्य करता है। ऐसे आत्मस्वभाव पर जिसकी दृष्टि है वह स्वयं कर्त्ता होकर अपने सम्यग्दर्शनादिरूप परिणमित होता है। सम्यग्दर्शन–ज्ञान–चारित्र सिद्धरूप भाव है और आत्मा उसका भावक है। भवनरूप भाव में तन्मय होकर, उसका भावक होकर आत्मा स्वयं उसे भाता है अर्थात् उसे करता है – ऐसी उसकी कर्तृत्व शक्ति है।

– आत्मप्रसिद्धि, पृष्ठ 509

वीतराग–विज्ञान

वीतराग–विज्ञान ही, तीन लोक में सार।
वीतराग–विज्ञान का , घर–घर होय प्रसार ।।

वर्ष : 36 (वीर नि. संवत् – 2543) 410 अंक : 3

धनि ते प्रानि, जिनके....

धनि ते प्रानि जिनके तत्त्वारथ श्रद्धान ।।टेक ।।
रहित सप्त भय तत्त्वारथ में, चित्त न संशय आन।
कर्म कर्मफल की नहिं इच्छा, पर में धरत न ग्लानि ।।
धनि ते प्रानि, जिनके तत्त्वारथ श्रद्धान ।।1।।

सकल भाव में मूढ़ दृष्टि तजि, करत साम्यरस पान।
आतम धर्म बढ़ावैं वा, परदोष न उचरैं वान ।।
धनि ते प्रानि, जिनके तत्त्वारथ श्रद्धान ।।2।।

निज स्वभाव वा, जैनधर्म में, निज पर थिरता दान।
रत्नत्रय महिमा प्रगटावैं, प्रीति स्वरूप महान ।।
धनि ते प्रानि, जिनके तत्त्वारथ श्रद्धान ।।3।।

ये वसु अंग सहित निर्मल यह, समकित निज गुण जान।
भागचंद शिवमहल चढ़न को, अचल प्रथम सोपान ।।
धनि ते प्रानि, जिनके तत्त्वारथ श्रद्धान ।।4।।

– कविवर पण्डित भागचंदजी

सम्पादकीय

कुन्दकुन्द शतक अनुशीलन

(गतांक से आगे ...)

अशक्य की श्रद्धा करें

(२३)

जं सक्कइ तं कीरइ जं च ण सक्केइ तं च सद्दहणं।
केवलिजिणेहिं भणियं सद्दहमाणस्स सम्मत्तं।।

(हरिगीत)

जो शक्य हो वह करें और अशक्य की श्रद्धा करें।
श्रद्धान ही सम्यक्त्व है इस भाँति सब जिनवर कहें।।

जो शक्य हो, वह करे; जो शक्य न हो, वह न करे; पर श्रद्धान तो सभी का करे; क्योंकि केवली भगवान ने श्रद्धान करने वाले को सम्यग्दर्शन होता है – ऐसा कहा है।

यह गाथा अष्टपाहुड़ के दर्शनपाहुड़ नामक पाहुड़ की २२वीं गाथा है। इसमें यह बताया गया है कि अपनी भूमिकानुसार जो कार्य शक्य हो, अपने से हो सके; उसे अवश्य करे। जो कार्य अपने से न हो सके, वह कार्य भी करने योग्य है – ऐसा श्रद्धान करना चाहिए; क्योंकि **श्रद्धा करनेवाले को सम्यक्त्व की प्राप्ति होती है – ऐसा केवली भगवान ने कहा है।**

तात्पर्य यह है कि सम्यग्दर्शन हो जाने के उपरान्त चारित्र गुण में निर्मलता का विकास क्रमश: होता है; अत: चारित्र गुण की निर्मलता का विकास भूमिकानुसार क्रमश: ही होता है; पर **श्रद्धान का सम्यक्पना तो चौथे गुणस्थान में परिपूर्ण हो जाता है।**

श्रद्धान की दिशा सम्यक् होने से चारित्र भले ही धीरे-धीरे हो, पर चारित्र का विकास सही दिशा में होता है।

इसीप्रकार की एक गाथा नियमसार में भी प्राप्त होती है; जो इसप्रकार है –

जदि सक्कदि कादुं जे पडिकमणादिं करेज्ज झाणमयं।
सत्तिविहीणो जा जइ सद्दहणं चेव कायव्वं।।१५४।।

(हरिगीत)

यदि शक्य हो तो ध्यानमय प्रतिक्रमण करना चाहिए।
यदि नहीं हो शक्ति तो श्रद्धान ही कर्त्तव्य है।।१५४।।

यदि किया जा सके तो ध्यानमय प्रतिक्रमण ही करो; यदि तू शक्ति विहीन हो तो तबतक श्रद्धान ही कर्त्तव्य है।

उक्त गाथा का अर्थ पद्मप्रभमलधारिदेव इसप्रकार करते हैं –

‘‘सहज वैराग्यरूपी महल के शिखर के ही शिखामणि, परद्रव्य से परांगमुख और स्वद्रव्य में निष्णात बुद्धिवाले, पाँच इन्द्रियों के विस्तार से रहित देहमात्र परिग्रह के धारी, परमागमरूपी मकरंद झरते हुए मुख कमल से शोभायमान हे पद्मप्रभ मुनिशार्दूल ! संहनन और शक्ति का प्रादुर्भाव हो तो मुक्तिसुन्दरी के प्रथम दर्शन की भेंटस्वरूप निश्चय प्रतिक्रमण, निश्चय प्रायश्चित्त, निश्चय प्रत्याख्यान आदि प्रमुख शुद्ध निश्चय क्रियाएँ ही कर्त्तव्य हैं।

यदि इस हीन दग्धकालरूप अकाल में तू शक्तिहीन हो तो तुझे केवल निज परमात्मतत्त्व का श्रद्धान ही कर्त्तव्य है।’’

टीकाकार मुनिराज पद्मप्रभमलधारिदेव इस गाथा की टीका में स्वयं को वैराग्यरूपी महल के शिखर के शिरोमणि कह रहे हैं, देहमात्र परिग्रहधारी कह रहे हैं। साथ में यह भी कह रहे हैं कि मेरे मुख से परमागमतत्त्व का मकरंद झरता है। मैं मुनि शार्दूल हूँ, मुझे निश्चय-प्रतिक्रमण-प्रत्याख्यान ही करना चाहिए, पर दुष्काल के प्रभाव से संभव नहीं हो रहा। अत: मात्र श्रद्धान ही कर रहा हूँ।

इसके बाद टीकाकार मुनिराज श्री पद्मप्रभमलधारिदेव एक छन्द स्वयं लिखते हैं; जो इसप्रकार है –

(मंदाक्रांता)

असारे संसारे कलिविलसिते पापबहुले
न मुक्तिर्मार्गेऽस्मिन्नघजिननाथस्य भवति।
अतोऽध्यात्मं ध्यानं कथमिह भवेन्निर्मलधियां
निजात्मश्रद्धानं भवभयहरं स्वीकृतमिदम् ।।२६४।।

(हरिगीत)

पापमय कलिकाल में जिननाथ के भी मार्ग में।
मुक्ति होती है नहीं निजध्यान संभव न लगे।।
तो साधकों को सतत आतमज्ञान करना चाहिए।
निज त्रिकाली आत्म का श्रद्धान करना चाहिए।।२६४।।

इस असार संसार में पाप की बहुलतावाले कलिकाल के विलास में निर्दोष जिननाथ के मार्ग में भी मुक्ति नहीं है। इसलिए इस काल में आत्मध्यान कैसे हो सकता है ? तात्पर्य यह है कि ध्यान की विरलता है। शुक्लध्यान तो है ही नहीं, निश्चय धर्मध्यान भी विरल है।

तत्त्वार्थसूत्र के अन्त में जो गाथायें छपी रहती हैं, उनमें भी इसप्रकार की एक गाथा आती है, जो इसप्रकार है -

जं सक्कइ तं कीरइ जं ण सक्कइ तहेव सद्दहणं।
सद्दहभावो जीवो पावइ अजरामरं ठाणं।।

जो शक्य है, वह करना चाहिए, पर जो शक्य नहीं है, उसका श्रद्धान करना चाहिए; क्योंकि श्रद्धान करनेवाला जीव अजर-अमर स्थान (मुक्ति) को प्राप्त करता है।

निश्चय-व्यवहार सम्यक्त्व

(२४)

जीवादीसद्दहणं सम्मत्तं जिणवरेहिं पण्णत्तं।
ववहारा णिच्छयदो अप्पाणं हवइ सम्मत्तं।।

(हरिगीत)

जीवादि का श्रद्धान ही व्यवहार से सम्यक्त्व है।
पर नियत नय से आत्म का श्रद्धान ही सम्यक्त्व है।।

जिनेन्द्र भगवान ने कहा है कि जीवादि तत्त्वों का श्रद्धान व्यवहार सम्यग्दर्शन है और अपने आत्मा का श्रद्धान निश्चय सम्यग्दर्शन है।

यह गाथा अष्टपाहुड़ के दर्शनपाहुड़ की २०वीं गाथा है। इसमें सम्यग्दर्शन का स्वरूप निश्चयनय और व्यवहारनय से समझाया गया है।

व्यवहारनय से जीवादि तत्त्वार्थों का श्रद्धान व्यवहार सम्यग्दर्शन है और निश्चयनय से अपने आत्मा का श्रद्धान, प्रतीति, रुचि तथा अपने आत्मा में अपनापन निश्चय सम्यग्दर्शन है।

पराश्रित कथन को व्यवहार कहते हैं और स्वाश्रित कथन को निश्चय कहते हैं।

व्यवहार-निश्चय उक्त परिभाषा के अनुसार जीवादि पदार्थों का श्रद्धान पराश्रित कथन होने से व्यवहार है और आत्मा का श्रद्धान स्वाश्रित कथन होने से निश्चय है।

अथवा भेद से कथन **व्यवहार** है और अभेद कथन **निश्चय** है - इस परिभाषा के अनुसार तत्त्वार्थों का श्रद्धान भेदरूप कथन है, इसलिए व्यवहार है और आत्मश्रद्धान अभेदरूप कथन होने से निश्चय है।

इसप्रकार अनेकप्रकार से निश्चय-व्यवहार सम्यग्दर्शन को जिनवाणी में समझाया है।

स्वद्रव्यरत श्रमण सम्यग्दृष्टि हैं

(२५)

सद्दव्वरओ सवणो सम्माइट्ठी हवेइ णियमेण।
सम्मत्तपरिणदो उण खवेइ दुट्ठट्ठकम्माइं।।

(हरिगीत)

नियम से निज द्रव्य में रत श्रमण सम्यकवंत हैं।
सम्यक्त्व-परिणत श्रमण ही क्षय करें करमानन्त हैं।।

जो श्रमण स्वद्रव्य में रत है, रुचिवंत है; वह नियम से सम्यक्त्व सहित है। सम्यक्त्व सहित वह श्रमण दुष्टाष्ट कर्मों का नाश करता है।

अपने आत्मा में अपनापन स्थापित कर अपने आत्मा में लीन हो जाने वाले सम्यग्दृष्टि धर्मात्मा श्रमण आठ कर्मों का नाश करते हैं, सिद्धदशा को प्राप्त करते हैं।

यह गाथा अष्टपाहुड़ ग्रन्थ के मोक्षपाहुड़ अधिकार की १४वीं गाथा है। इसमें यह समझाया गया है कि स्वद्रव्यरत श्रमण नियम से सम्यग्दृष्टि है।

वस्तुत: बात यह है कि चाहे श्रमण हो या श्रावक, यदि वह स्वद्रव्य में रत है तो नियम से सम्यग्दृष्टि है; क्योंकि अपने आत्मा में अपनेपन के ज्ञान-श्रद्धानपूर्वक लीनता ही सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्ररूप निश्चय मुक्तिमार्ग है।

निश्चय मोक्षमार्ग में स्थित श्रमण नियम से निश्चय रत्नत्रय के धारी होते हैं और वे शीघ्र ही कर्मों का नाश कर मुक्ति प्राप्त करते हैं।

अधिक क्या कहें ?

(२६)

किं बहुणा भणिएण जे सिद्धा णरवरा गए काले।
सिज्झिहहि जे वि भविया तं जाणह सम्ममाहप्पं ।।

(हरिगीत)

मुक्ती गये या जायेंगे माहात्म्य है सम्यक्त्व का।
यह जान लो हे भव्यजन! इससे अधिक अब कहें क्या ।।

अधिक कहने से क्या लाभ है, इतना समझ लो कि आज तक जो जीव सिद्ध हुए हैं और भविष्यकाल में सिद्ध होंगे, वह सब सम्यग्दर्शन का ही माहात्म्य है।

तात्पर्य यह है कि सम्यग्दर्शन के बिना न तो आज तक कोई सिद्ध हुआ है और न भविष्य में होगा।

यह गाथा भी अष्टपाहुड़ ग्रन्थ के मोक्षपाहुड़ नामक अधिकार की ८८वीं गाथा है, जिसमें सम्यग्दर्शन की महिमा गायी गई है।

कहा गया है कि अधिक क्या कहें ? सम्यग्दर्शन का इतना माहात्म्य

है कि **आज तक जितने भी महान पुरुष गतकाल में मोक्ष गये हैं; वे सभी सम्यक्त्व के प्रभाव से ही गये हैं और जितने भी जीव भविष्य में मोक्ष जावेंगे; वे सभी सम्यक्त्व के माहात्म्य से ही जावेंगे।**

इसलिए सभी भव्यजीवों को चाहिए कि वे उस सम्यक्त्व प्राप्ति के लिए प्रयत्न करें।

अपने त्रिकाली ध्रुव भगवान आत्मा की पहिचान और अपनेपन का नाम ही सम्यग्दर्शन है। यदि हम अपने उस आत्मा को जाने ही नहीं, पहिचाने ही नहीं, हमारा उसमें अपनापन ही न हो तो हम उसका ध्यान कैसे करेंगे ? ध्यान की अवस्था का नाम ही शुद्धोपयोग है।

जब शुद्धोपयोग नहीं होगा तो मुक्ति की प्राप्ति कैसे होगी ?

वे धन्य हैं

(२७)

ते धण्णा सुकयत्था ते सूरा ते वि पंडिया मणुया।
सम्मत्तं सिद्धियरं सिविणे वि ण मइलियं जेहिं ।।

(हरिगीत)

वे धन्य हैं सुकृतार्थ हैं, वे शूर नर पण्डित वही।
दुःस्वप्न में सम्यक्त्व को जिनने मलीन किया नहीं।।

जिन जीवों ने मुक्ति प्राप्त कराने वाले सम्यग्दर्शन को स्वप्न में भी मलिन नहीं किया; वे ही धन्य हैं, कृतार्थ हैं, शूरवीर हैं, पण्डित हैं, मनुष्य हैं। तात्पर्य यह है कि **सभी गुण सम्यग्दर्शन से ही शोभा पाते हैं।**

अतः हमें निर्मल सम्यग्दर्शन धारण करना चाहिए। स्वप्न में भी ऐसा कार्य नहीं करना चाहिए, जिससे सम्यग्दर्शन में मलिनता उत्पन्न हो।

यह गाथा भी अष्टपाहुड़ शास्त्र के मोक्षपाहुड़ अधिकार की ८९वीं गाथा है। इसमें कहा गया है कि **उन शूरवीर मानवों को धन्य है, वे पंडितजन ही कृतार्थ हैं, भले हैं; जिन ज्ञानी धर्मात्मा पण्डितजनों ने अपने सम्यग्दर्शन को एक क्षण के लिए भी मलिन नहीं किया है।**

तात्पर्य यह है कि इस जगत के सम्पूर्ण गुण एकमात्र सम्यक्त्व गुण

का ही आश्रय करते हैं।

जिन जीवों ने निर्मल सम्यग्दर्शन को धारण किया है; वे महान हैं, भाग्यवान हैं, शूरवीर हैं, पण्डित हैं, धन्य हैं, कृतार्थ हैं। वे क्या नहीं हैं, वे सब कुछ हैं।

सम्यक्त्व में होनेवाली मलिनता है, महादुर्भाग्य है और निर्मलता महान सौभाग्य है। (क्रमश:)

वैराग्य समाचार

(1) **विदिशा (म.प्र.) निवासी श्री अशोककुमारजी घड़ीवालों** का देहावसान दिनांक 24 अगस्त को शांतपरिणामोंपूर्वक हो गया। ज्ञातव्य है कि आप ब्र. सुमतप्रकाशजी खनियांधाना के पिताजी थे।

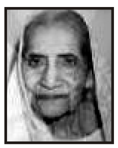

(2) **मुम्बई एवं सूरत निवासी श्रीमती बसंतीदेवी छाबड़ा** ध.प. स्व.श्री हरखचंदजी छाबड़ा (सीकर) का 95 वर्ष की आयु में दिनांक 8 सितम्बर को शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। आप अत्यंत स्वाध्यायी एवं तत्त्वरसिक महिला थीं। आपने अनेक वर्षों तक आध्यात्मिक शिविरों में तत्त्वज्ञान का लाभ लिया था। आपकी स्मृति में संस्था हेतु 10,200/- रुपये प्राप्त हुये।

(3) **खनियांधाना (म.प्र.) निवासी श्री कपूरचंदजी जैन (मुनीम सा.)** का दिनांक 15 सितम्बर को इन्दौर में अत्यंत शांतपरिणामोंपूर्वक देह परिवर्तन हो गया। आप अत्यंत स्वाध्यायी एवं तत्त्वरसिक थे। आपने गुरुदेवश्री के सान्निध्य में अनेक बार सोनगढ प्रवास किया। आपकी स्मृति में संस्था हेतु 2100/- रुपये प्राप्त हुये।

दिवंगत आत्मा चतुर्गति के दु:खों से छूटकर शीघ्र ही अनंत अतीन्द्रिय आनंद को प्राप्त हो - यही मंगल भावना है।

डॉ. भारिल्ल के आगामी कार्यक्रम

1 से 5 अक्टूबर 2017	श्रवणबेलगोला	विद्वत् सम्मेलन
16 से 20 अक्टू.2017	देवलाली	दीपावली
14 से 19 नव. 2017	झालरापाटन	पंचकल्याणक
24 से 28 नव. 2017	नागपुर	पंचकल्याणक
2 से 7 दिसम्बर 2017	शाश्वतधाम-उदयपुर	पंचकल्याणक
10 से 12 जन. 2018	मंगला.विश्व.-अलीगढ	सेमिनार
12 से 16 फर.-2018	ललितपुर	पंचकल्याणक

छहढाला प्रवचन

सम्यग्ज्ञानपूर्वक चारित्र का उपदेश

सम्यग्ज्ञानी होय बहुरि, दृढ चारित्र लीजै।
एकदेश अरु सकलदेश, तसु भेद कहीजै।।
त्रस हिंसा को त्याग, वृथा थावर न संहारै।
परवधकार कठोर निंद्य, नहिं वचन उचारै।।१०।।
जल मृतिका बिन और, नाहिं कछु गहै अदत्ता।
निज बनिता बिन सकल, नारि सौं रहैं विरत्ता।।
अपनी शक्ति विचार, परिग्रह थोरो राखै।
दश दिश गमन प्रमान ठान, तसु सीम न नाखैं।।११।।

(सुप्रसिद्ध आध्यात्मिक विद्वान पण्डित दौलतरामजीकृत छहढाला की चौथी ढाल पर गुरुदेवश्री के प्रवचन पाठकों के लाभार्थ यहाँ प्रस्तुत किये जा रहे हैं।)

(गतांक से आगे....)

कोई जीव (बछड़ा इत्यादि) अति दु:ख से पीड़ित हो, तब उसे दु:ख से शीघ्र छुड़ाने के लिए गोली आदि से मार देने का विचार करना भी त्रसहिंसा ही है, ऐसे परिणाम धर्मी के नहीं होते। मात्र शरीर छूट जाने से कोई दु:ख मुक्त नहीं हो जाता; क्योंकि यह जीव शरीर जितना ही नहीं है, यह शरीर छोड़कर दूसरे भव में वह अपने पाप-पुण्यानुसार दु:ख-सुख भोगता है। इसलिए उसके मारने का विचार आर्य जीव को नहीं होता।

इसीप्रकार सर्पादिक हिंसक जीव जीवित रहेंगे तो दूसरे बहुत से जीवों को मारते रहेंगे, अत: उन सर्पादिक को मार देना उचित है; धर्मी को ऐसा विचार नहीं होता। कोई सिंहादिक हमला करे, वहाँ रक्षा के लिए उसका प्रतिकार करना दूसरी बात है, यद्यपि वह भी हिंसा तो है ही, परन्तु किसी

जीव को मार डालने की बुद्धि धर्मी जीव को नहीं होती, त्रस जीव की हिंसा से उत्पन्न औषधादिक का प्रयोग धर्मी जीव प्राण जाने पर भी नहीं करता। त्रस हिंसा करनी पड़े ऐसी विद्या (वास्तव में कुविद्या) वह नहीं पढाता।

अन्दर में कषाय की उत्पत्ति ही न हो, उसका नाम अहिंसा है और जहाँ कषाय नहीं, वहाँ जीवहिंसा की प्रवृत्ति भी नहीं होती।

पुरुषार्थसिद्धयुपाय में अमृतचन्द्रदेव ने जिनागम का महान सिद्धान्त बताते हुए लिखा है -

अप्रादुर्भाव: खलु रागादीनां भवत्यहिंसेति।
तेषामेव उत्पत्ति: हिंसेति जिनागमस्य संक्षेप: ।।४४।।

आत्मा में रागादिभाव की उत्पत्ति न होना अर्थात् वीतराग भाव होना वास्तव में अहिंसा है और रागादिभावों की उत्पत्ति होना हिंसा है - यह जिनागम का सार है।

बाहर में कदाचित् दूसरे जीवों की हिंसा न हो तो भी इस जीव को जितने अंश में राग हुआ, उतनी तो हिंसा ही है, क्योंकि रागादि कषाय से उसने प्रथम अपनी आत्मा की हिंसा तो कर ही ली और रागादि की उत्पत्ति न होना, वही अहिंसा है। जिनागम में कथित इस अहिंसा तथा हिंसा के महासिद्धान्त को लक्ष्य में रखकर ही समस्त जिनागम का अर्थ समझना चाहिए। भगवान के आगम में राग को हिंसा ही कहा है, फिर वह राग चाहे जिस जाति का हो, शुभ हो अथवा अशुभ, परन्तु है वह हिंसा ही और जब उसको हिंसा कहा तो फिर उस हिंसा में धर्म नहीं हो सकता।

चैतन्य में लीनता होने पर ऐसा आनन्द होता है कि राग की उत्पत्ति ही नहीं होती - ऐसी धर्मी जीव की अहिंसा है और ऐसी वीतरागी अहिंसा

ही परम धर्म है। परम धर्म रूप ऐसी अहिंसा वीतरागी-जिनमार्ग में ही होती है। राग में धर्म माननेवाले को अहिंसा धर्म कभी नहीं हो सकता।

जैनशासन में जिनवदेव ने मोक्ष के कारणरूप अहिंसाधर्म का सच्चा स्वरूप अलौकिक रीति से समझाया है।

अहिंसा धर्म सारे जगत को प्रिय है; परन्तु उसका सच्चा स्वरूप समझनेवाला तो जगत में कोई विरला ही है। उस अहिंसा का सच्चा स्वरूप समझे बिना उसका पालन नहीं हो सकता, इसलिए अहिंसा प्रेमियों को उसका सच्चा स्वरूप समझ लेना चाहिए। भगवान महावीर के शासन में परम अहिंसा धर्म का सच्चा स्वरूप समझाया है।

सर्वप्रथम अहिंसा का अर्थ समझना आवश्यक है।

महावीर प्रभु के शासन में परम अहिंसा धर्म उसको कहा है कि जिसके सेवन से अवश्य ही मोक्ष प्राप्ति हो और आत्मा के स्वरूप का घात न हो तथा हिंसा उसे कहते हैं कि जिससे आत्मा का स्वभाव घाता जाए और संसार में भव धारण करना पड़े। इसतरह अहिंसा तो मोक्ष का कारण है और हिंसा संसार का कारण है, क्योंकि अहिंसा वीतरागभावरूप है, हिंसा रागरूप है।

हिंसा के भी दो प्रकार हैं -

१. शुभभाव जनित अर्थात् प्रशस्त कषायरूप हिंसा जो कि स्वर्गादिक का कारण है।

२. अशुभभाव जनित अर्थात् अप्रशस्त कषायरूप हिंसा जो कि नरकादि दुर्गति का कारण है।

इसप्रकार जीव के अकषाय और सकषाय (वीतराग या रागादि) परिणाम के साथ अहिंसा और हिंसा का संबंध है; किन्तु पर जीव के जीवन या मरण के साथ इस जीव की अहिंसा या हिंसा का संबंध नहीं है। **(क्रमश:)**

नियमसार प्रवचन –

शुद्ध आत्मा को कर्तृत्व का अभाव

परमपूज्य सर्वश्रेष्ठ दिगम्बराचार्य कुन्दकुन्द के प्रसिद्ध परमागम नियमसार के परमार्थप्रतिक्रमणाधिकार की गाथा ७७ से ८१ पर हुये आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी के अध्यात्मरस गर्भित प्रवचनों का संक्षिप्त सार यहाँ दिया जा रहा है। गाथाएं मूलत: इसप्रकार हैं –

णाहं णारयभावो तिरियत्थो मणुवदेवपज्जाओ।
कत्ता ण हि कारइदा अणुमंता णेव कत्तीणं।।७७।।
णाहं मग्गणठाणो णाहं गुणठाण जीवठाणो ण।
कत्ता ण हि कारइदा अणुमंता णेव कत्तीणं।।७८।।
णाहं बालो वुड्ढो ण चेव तरुणो ण कारणं तेसिं।
कत्ता ण हि कारइदा अणुमंता णेव कत्तीणं।।७९।।
णाहं रागो दोसो ण चेव मोहो ण कारणं तेसिं।
कत्ता ण हि कारइदा अणुमंता णेव कत्तीणं।।८०।।
णाहं कोहो माणो ण चेव माया ण होमि लोहो हं।
कत्ता ण हि कारइदा अणुमंता णेव कत्तीणं।।८१।।

(हरिगीत)

मैं नहीं नारक देव मानव और तिर्यग मैं नहीं।
कर्ता कराता और मैं कर्तानुमंता भी नहीं।।७७।।
मार्गणास्थान जीवस्थान गुणथानक नहीं।
कर्ता कराता और मैं कर्तानुमंता भी नहीं।।७८।।
बालक तरुण बूढा नहीं इन सभी का कारण नहीं।
कर्ता कराता और मैं कर्तानुमंता भी नहीं।।७९।।
मैं मोह राग द्वेष न इन सभी का कारण नहीं।
कर्ता कराता और मैं कर्तानुमंता भी नहीं।।८०।।
मैं मान माया लोभ एवं क्रोध भी मैं हूँ नहीं।
कर्ता कराता और मैं कर्तानुमंता भी नहीं।।८१।।

नरक पर्याय, तिर्यंच पर्याय, मनुष्य पर्याय और देव पर्यायरूप मैं नहीं हूँ। इन पर्यायों का करनेवाला, करानेवाला और करने-कराने की अनुमोदना करनेवाला भी मैं नहीं हूँ।

मार्गणास्थान, गुणस्थान और जीवस्थान भी मैं नहीं हूँ। इनका करनेवाला, करानेवाला और करने-कराने की अनुमोदना करनेवाला भी मैं नहीं हूँ।

मैं बालक, वृद्ध या जवान भी नहीं हूँ और इन तीनों का कारण भी नहीं हूँ। उन तीनों अवस्थाओं का करनेवाला, करानेवाला और करने-कराने की अनुमोदना करनेवाला भी मैं नहीं हूँ।

मैं मोह, राग और द्वेष नहीं हूँ, इनका कारण भी नहीं हूँ। इनका करनेवाला, करानेवाला और करने-कराने की अनुमोदना करनेवाला भी मैं नहीं हूँ।

मैं क्रोध, मान, माया और लोभ भी नहीं हूँ। इनका करनेवाला, करानेवाला और करने-कराने की अनुमोदना करनेवाला भी मैं नहीं हूँ।

(गतांक से आगे....)

यहाँ पाँच रत्नों के शोभित कथन-विस्तार द्वारा सकल विभावपर्यायों के त्याग का विधान कहा है। यह प्रतिक्रमण की बात है, इसलिए विभाव के त्याग की बात की है। वास्तव में तो शुद्धस्वभाव में लीनता करने पर विभाव उत्पन्न ही नहीं होता।

अब इन पाँच गाथाओं की टीका पूर्ण करते हुए टीकाकार मुनिराज श्रीपद्मप्रभमलधारिदेव श्लोक कहते हैं :-

(वसंततिलका)

भव्यः समस्तविषयाग्रहमुक्तचिन्तः
स्वद्रव्यपर्ययगुणात्मनि दत्तचित्तः।
मुक्त्वा विभावमखिलं निजभावभिन्नं
प्राप्नोति मुक्तिमचिरादिति पंचरत्नात्।।१०९।।

(हरिगीत)

सम्पूर्ण विषयों के ग्रहण की भावना से मुक्त हों।
निज द्रव्य गुण पर्याय में जो हो गये अनुरक्त हों।।

छोड़कर सब विभावों को नित्य निज में ही रमें।
अति शीघ्र ही वे भव्य मुक्तीरमा की प्राप्ति करें।।१०९।।

इसप्रकार पंचरत्नों द्वारा जिसने समस्त विषयों के ग्रहण की चिन्ता को छोड़ा है और निज द्रव्यगुणपर्याय के स्वरूप में चित्त एकाग्र किया है, वह भव्य जीव निज भाव से भिन्न ऐसे सकल विभाव को छोड़कर अल्पकाल में मुक्ति को प्राप्त करता है।

इसप्रकार इन पाँच गाथाओं का भाव समझकर जो जीव समस्त भेदों को छोड़कर अपने शुद्धस्वरूप में एकाग्र होता है, वह अल्पकाल में मुक्ति पाता है। अपने स्वभाव के अतिरिक्त पुण्य-पाप के भाव भेद है और उनका लक्ष्य करना विषय है। धर्मीजीव ऐसे विषयों के ग्रहण की चिन्ता को छोड़ता है। द्रव्य, गुण और कारणपर्याय सहित जो परमपारणामिक स्वभावभाव त्रिकाल एकरूप शुद्ध है, उसमें एकाग्रता करना मोक्षमार्ग है।

इसप्रकार जो भव्यजीव अपने शुद्धस्वभाव को भाता है तथा एकाग्र होता है, उसके विभाव उत्पन्न नहीं होता; तब विभाव को छोड़ा - ऐसा कहा जाता है। वही जीव शीघ्र ही सिद्धदशा को प्राप्त करता है।

साधकदशा में अपनी भूमिकानुसार आंशिक निर्मलता होती है, आंशिक राग भी होता है तथा राग के निमित्त भी होते हैं, उन निमित्तों के ऊपर लक्ष्य भी जाता है; परन्तु वह अधूरी निर्मल पर्याय, राग अथवा निमित्त आश्रय करने योग्य नहीं है, वह सब व्यवहारनय का विषय है। अपना शुद्ध आत्मा एकरूप ज्ञायक है, वह निश्चयनय का विषय है और वही आदरणीय है। उसकी श्रद्धा, ज्ञान और रमणता से मुक्ति प्राप्त होती है। **(क्रमशः)**

पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के समस्त ऑडियो - वीडियो प्रवचन साहित्य एवं अन्य अनेक जानकारियों के लिये अवश्य देखें -
वेबसाईट - www.vitragvani.com
संपर्क सूत्र-श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई
Ph.: 022-26130820, 26104912, E-Mail- info@vitragvani.com

समयसार की 47 शक्तियों पर प्रवचन

समयसार कलश 262

आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी द्वारा समयसार की 47 शक्तियों पर किये गये प्रवचनों को इसी अंक से क्रमशः प्रकाशित किया जा रहा है। भूमिका के रूप में समयसार कलश 262 व 263 से प्रारम्भ किया गया प्रकरण पाठकों के लाभार्थ यहाँ प्रस्तुत है।

(गतांक से आगे....)

प्रश्न - 'जिसको लक्षण प्रसिद्ध है, उसे ही लक्ष्य की प्रसिद्धि होती है' - यदि ऐसा है तो क्या लक्ष्यरूप आत्मा ज्ञान लक्षण से जुदी वस्तु है? क्या ज्ञान की प्रसिद्धि और आत्मा की प्रसिद्धि - ये दो जुदी-जुदी वस्तुएँ हैं?

उत्तर - आचार्य कहते हैं - देखो, पात्र शिष्य को लक्ष्य-लक्षण का भेद भी सुहाता नहीं है, इसकारण यह प्रश्न किया है। शिष्य को स्वानुभव की तीव्र अभिलाषा है न!

अरे भाई! ज्ञान से भिन्न लक्ष्य नहीं है; क्योंकि ज्ञान व आत्मा में द्रव्यपने अभेद है; फिर भी अज्ञानी को लक्ष्य की पहचान कराने के लिए भेद से बात कही है; क्योंकि लक्षण लक्ष्य को बताता है न! वस्तुतः लक्ष्य (आत्मा) ज्ञान-लक्षण से भिन्न कोई अन्य नहीं है; क्योंकि ज्ञान व आत्मा में द्रव्यपने अभेद है अर्थात् आत्मा ज्ञानस्वभावमय ही है।

यहाँ ज्ञान का अर्थ पर का ज्ञान अथवा शास्त्र का ज्ञान नहीं है। यहाँ तो राग से भिन्न पड़ा हुआ अन्तर्मुखाकार ज्ञानलक्षण लक्ष्य से भिन्न नहीं है - यह अर्थ समझना चाहिए।

जिसप्रकार शक्कर मीठी है - ऐसा जो कहा जाता है, उससे कोई ऐसा नहीं मानता कि मिठास शक्कर से भिन्न अलग कोई वस्तु है, बल्कि शक्कर व मिठास में गुण-गुणी का भेद होते हुए भी दोनों को अभेद ही माना जाता

है; उसी तरह **जाननस्वभाव और आत्मा एक ही है। जैसे राग व आत्मा जुदे-जुदे हैं, वैसे ज्ञान व आत्मा जुदे नहीं हैं।**

यद्यपि ज्ञान एक गुण है और आत्मा अनन्तगुणमय है फिर भी ज्ञान व आत्मा वस्तुपने अभेद है। इसलिए जो ज्ञान की प्रसिद्धि है वही आत्मा की प्रसिद्धि है इसप्रकार लक्ष्य-लक्षण की सिद्धि एक साथ ही है और एक वस्तुमय है।

प्रश्न – जब दोनों एक ही हैं तो भेद किया ही क्यों?

उत्तर – प्रसिद्धत्व व प्रसाध्यमानत्व के कारण लक्षण व लक्ष्य का विभाग किया गया है। ज्ञानलक्षण प्रसिद्ध है, कारण कि ज्ञानमात्र को स्व-संवेदन से सिद्धपना है अर्थात् ज्ञान सभी प्राणियों को स्व-संवेदन से अनुभव में आता है। ऐसे प्रसिद्ध ज्ञान से अविनाभूत अनन्तगुणमय अभेद एक भगवान आत्मा प्रसाध्यमान है, साधने योग्य है। यहाँ ज्ञान को अन्तर्मुख करके उसके अविनाभूत शुद्ध आत्मा को ध्येय बनाने की बात है, परद्रव्य व रागादि को जानने की बात यहाँ नहीं कही जा रही है; क्योंकि इसी रीति से आत्मा की प्रसिद्धि संभव है अर्थात् सम्यक् श्रद्धान व ज्ञान प्रगट करने की यही एकमात्र विधि है।

अहा! अन्तर में सच्चिदानन्द प्रभु आत्मा विराज रहा है, उसे ध्येय बनाये बिना, उसका आश्रय किए बिना सब क्रिया-कलाप व्यर्थ हैं; क्योंकि प्रसिद्ध ज्ञान के द्वारा मात्र एक शुद्ध आत्मा ही प्रसाध्यमान है। कहते हैं कि जिस दशा में जानपना है, वह जानने रूप ज्ञानपर्याय प्रसिद्ध है; क्योंकि वह हम सबके स्व-संवेदन से सिद्ध है। ज्ञान सर्व को जानता है, पर को भी जानता है। यहाँ पर को जानने की अपेक्षा नहीं है।

यहाँ तो यह कहते हैं कि – अन्तरंग में अनन्त धर्मों का धारक ध्रुवधाम निज ध्येयरूप प्रभु आत्मा को ही जानो, उसे ही ग्रहण करना है, वही एक मात्र प्रसाध्यमान है। जाननेरूप लक्षण और ध्रुव भगवान लक्ष्य बस; इसके सिवाय अन्य देव-शास्त्र-गुरु आदि लक्ष्य नहीं हैं। **(क्रमशः)**

ज्ञान गोष्ठी

सायंकालीन तत्त्वचर्चा के समय विभिन्न मुमुक्षुओं द्वारा
पूज्य स्वामीजी से पूछे गये प्रश्न और स्वामीजी द्वारा दिये गये उत्तर

प्रश्न : क्रमबद्ध मानने पर करने के लिये क्या है ?

उत्तर : करना है कहाँ ? करने में तो कर्तृत्वबुद्धि आती है। करने की बुद्धि छूट जाये सो क्रमबद्ध है। यह जीव पर में तो कुछ कर नहीं सकता और अपने में भी जो होनेवाला है, वही होता है अर्थात् अपने में राग होना है तो होगा, उसमें करना क्या ? राग में से कर्तृत्वबुद्धि छूट गई, भेद और पर्याय से भी दृष्टि हट गई; तब क्रमबद्ध की प्रतीति हुई। क्रमबद्ध की प्रतीति में ज्ञातादृष्टापना है। जहाँ निर्मल पर्याय को करने की बुद्धि भी मिट गई है, वहाँ राग को करूँ-यह बात कैसे होगी?

अरे ! ज्ञान करूँ – ऐसी बुद्धि भी छूट जाती है और अकेला ज्ञान रह जाता है। जिसे राग करना है, राग में अटकना है, उसे क्रमबद्ध की बात नहीं जमती। राग को करना और छोड़ना – दोनों आत्मा में नहीं है। आत्मा तो अकेला ज्ञानस्वरूप है।

पर की पर्याय तो जो होनी है, वही होती है, उसे मैं करूँ भी क्या और मेरे में जो राग आता है, उसे मैं क्या लाऊँ ? मुझमें जो शुद्धपर्याय आये उसको करूँ या लाऊँ – ऐसे विकल्प से भी मुझे क्या ? अपनी पर्याय में होनेवाला राग और होनेवाली शुद्धपर्याय को करने का विकल्प ही क्या ? राग और शुद्धपर्याय के कर्तृत्व का विकल्प शुद्धस्वभाव में नहीं है । अकर्तापना आ जाना ही मोक्षमार्ग का पुरुषार्थ है।

प्रश्न : मोक्ष की पर्याय यत्नपूर्वक करे तब होगी या होनी होगी तब होगी ?

उत्तर : ज्ञानी की दृष्टि द्रव्य के ऊपर पड़ी है। द्रव्य में भाव नाम का गुण है, इसी गुण के कारण निर्मल पर्याय होती है, उसको करे तब हो – ऐसा नहीं है। दृष्टि द्रव्य के ऊपर पड़ने से ही निर्मलता होती है।

प्रश्न : क्या श्रुतज्ञानी को केवलज्ञान प्रकट करने की उतावली नहीं होती है?

उत्तर : श्रुतज्ञानी को केवलज्ञान होने ही वाला है; अतः उतावली अधैर्यपना

नहीं होता। वह जानता है कि क्रमबद्धपर्याय के अनुसार केवलज्ञान प्रकट होने के काल में ही प्रकट होगा। क्रमबद्ध में अकर्त्तापन होने से वीतरागता है। जैसे द्वितीया का उदय हुआ है तो वह पूर्णचन्द्र बनकर ही रहेगा। इसमें किसीप्रकार का संशय नहीं है, वैसे ही जिसे अन्तरात्मा का भान हुआ है, उसे केवलज्ञान प्रकट होना ही है। केवलज्ञान तो दौड़ा आ रहा है, वह तो अल्पकाल में ही प्रकट होगा। इसमें संशय या संदेह की श्रुतज्ञानी को आवश्यकता ही नहीं है।

प्रश्न : हमारी काललब्धि नहीं पकी – इसलिये सम्यग्दर्शन नहीं होता है न?

उत्तर : नहीं, नहीं, ऐसा नहीं है। तुम्हारा पुरुषार्थ नहीं है; इसलिये सम्यग्दर्शन नहीं होता है। काललब्धि की भाषा (चर्चा) सुनकर धारणा कर ले और ऐसा बोले तो यह नहीं चलेगा। भगवान ने देखा होगा, तब सम्यग्दर्शन होगा – ऐसी धारणा से भी काम नहीं चलेगा। भगवान ने जो देखा है, उसकी प्रतीति माने उसका यथार्थ ज्ञान करे, यथार्थ निर्णय करे तो काम होगा । जब दृष्टि द्रव्यस्वभाव के ऊपर होती है तब उसकी काललब्धि भी पक गई है। पर के कार्य में तो उलटा पुरुषार्थ बराबर करता है और स्वयं के कार्य में काललब्धि का बहाना निकालकर पुरुषार्थ नहीं करता तो सम्यग्दर्शन कहाँ से होगा ?

प्रश्न : आप कहते हैं कि अकस्मात् कुछ नहीं होता; अत: ज्ञानी नि:शंक और निर्भय है; किन्तु समाचार-पत्र में तो अकस्मात् दुर्घटना के बहुत समाचार आते हैं।

उत्तर : जगत में अकस्मात् कुछ होता ही नहीं है। जिस द्रव्य की जो पर्याय जिस काल में होना हो, वही होती है। देह छूटने का काल जिस क्षेत्र और जिस निमित्त से हो, उसीप्रकार देह छूटती है। उलटा-सीधा या अकस्मात् किसी पदार्थ का परिणमन नहीं होता। सब परिणमन व्यवस्थित ही होता है।

प्रश्न : धर्म का मूल सर्वज्ञ है, उस सर्वज्ञ को माना – ऐसा कब कहा जाये ?

उत्तर : सर्वज्ञ द्रव्य की तीनकाल की पर्यायों को जानते हैं और वे पर्यायें जिस समय होनेवाली है, उसीसमय क्रमबद्ध होती है। क्रम तोड़कर नहीं होती है – ऐसा जब जानेगा तभी सर्वज्ञ को माना – ऐसा श्रद्धान किया जायेगा।

समाचार दर्शन -

20वाँ आध्यात्मिक शिक्षण-शिविर सम्पन्न

जयपुर (राज.) : पण्डित टोडरमल सर्वोदय ट्रस्ट द्वारा ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन में दिनांक 17 से 24 सितम्बर तक 20वाँ आध्यात्मिक शिक्षण-शिविर अनेक मांगलिक आयोजनों सहित संपन्न हुआ।

दिनांक 17 सितम्बर को शिविर के उद्घाटन समारोह के अवसर पर आयोजित सभा की अध्यक्षता श्री प्रेमचंदजी बजाज, कोटा ने की। मुख्य अतिथि के रूप में श्री प्रदीपजी चौधरी, किशनगढ एवं विशिष्ट अतिथि के रूप में श्री सूरजमलजी हूमड रामगंजमंडी व श्री प्रकाशचंदजी गंभीरमलजी अहमदाबाद उपस्थित थे। विद्वानों के अन्तर्गत तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल आदि अनेक विद्वान उपस्थित थे।

शिविर एवं मंच के उद्घाटनकर्त्ता श्री प्रेमचंदजी बजाज कोटा, ध्वजारोहणकर्त्ता श्री निहालचंदजी जैन जयपुर, प्रवचन मण्डप उद्घाटनकर्त्ता श्री प्रकाशजी छाबड़ा सूरत व श्री इन्द्रचंदजी कटारिया जयपुर थे। इसके अतिरिक्त आ.कुन्दकुन्द के चित्र अनावरणकर्त्ता श्री अरविन्दजी दोशी गोंडल, आ.धरसेन के चित्र अनावरणकर्त्ता पण्डित शिखरचंदजी विदिशा, पण्डित टोडरमलजी के चित्र अनावरणकर्त्ता श्री सौरभजी जैन मेरठ एवं गुरुदेवश्री के चित्र अनावरणकर्त्ता श्री शांतिलालजी जैन भीलवाड़ा थे।

आगन्तुक विद्वानों व महानुभावों का श्री सुशीलजी गोदीका जयपुर द्वारा तिलक लगाकर एवं श्री शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल जयपुर द्वारा माल्यार्पणकर स्वागत किया गया।

डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल ने अपने मार्मिक उद्बोधन में कहा कि यहाँ जयपुर, कोटा और बांसवाड़ा विद्यालयों के छात्रों को जैन तत्त्वज्ञान, न्यायशास्त्र व करणानुयोग के गहन अध्ययन के साथ-साथ आध्यात्मिक विषयों का विशेषज्ञ विद्वानों द्वारा गंभीर अध्ययन कराया जायेगा।

इस अवसर पर श्री प्रेमचंदजी बजाज, श्री प्रदीपजी चौधरी, श्री सूरजमलजी हूमड, श्री प्रकाशचंदजी सेमारी आदि महानुभावों ने भी सभा को संबोधित किया।

सभा का संचालन करते हुए ट्रस्ट के कार्यकारी महामंत्री श्री परमात्मप्रकाशजी ने टोडरमल स्मारक को समाज में विभिन्न प्रकार के शिविरों का प्रवर्तक बतलाते हुए ग्रीष्मकालीन प्रशिक्षण शिविरों, पूज्य गुरुदेवश्री के सान्निध्य में सोनगढ में आयोजित प्रवचनकार प्रशिक्षण शिविर, प्रतिष्ठाचार्य प्रशिक्षण शिविर, ग्रुप शिविर एवं अन्य विभिन्न प्रकार के शिविरों की रूपरेखा प्रस्तुत की एवं वर्तमान शिविर को एक युगांतरकारी कदम बतलाया।

शिविर में प्रतिदिन प्रात:काल ख्यातिप्राप्त तार्किक विद्वान डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल द्वारा 'दृष्टि का विषय' पर मार्मिक प्रवचन हुये। रात्रिकालीन प्रवचनों में प्रतिदिन ब्र.सुमतप्रकाशजी खनियांधाना द्वारा 'द्रव्य-गुण-पर्याय' विषय पर प्रवचनों के पूर्व पण्डित कमलचंदजी पिड़ावा, पण्डित शिखरचंदजी विदिशा, श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल जयपुर, डॉ.दीपकजी जैन 'वैद्य' जयपुर आदि अनेक विद्वानों के व्याख्यानों का लाभ मिला।

प्रात:काल नित्य-नियम पूजन के साथ-साथ विधि-विधान प्रशिक्षण एवं सायंकाल सामूहिक जिनेन्द्र-भक्ति का आयोजन किया गया।

शिक्षण कक्षायें – ब्र. सुमतप्रकाशजी खनियांधाना द्वारा सामान्य श्रावकाचार, पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली द्वारा प्रवचनसार व मोक्षमार्गप्रकाशक (व्यवहाराभासी मिथ्यादृष्टि), डॉ. वीरसागरजी शास्त्री दिल्ली द्वारा सर्वज्ञसिद्धि, पण्डित शांतिकुमारजी पाटील जयपुर द्वारा प्रमाण का प्रामाण्य व गृहीत-अगृहीत मिथ्यात्व, डॉ. नरेन्द्रकुमारजी शास्त्री जयपुर द्वारा प्रमाण का विषय/फल व क्रमबद्धपर्याय, डॉ. योगेशजी शास्त्री अलीगंज द्वारा परीक्षामुख व हेतु-हेत्वाभास, डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर द्वारा तीन लोक व नैगमादि सप्त नय, पण्डित पीयूषजी शास्त्री जयपुर द्वारा सात तत्त्व का अन्यथास्वरूप व चार अभाव/लक्षण-लक्षणाभास, पण्डित धर्मेन्द्रजी शास्त्री कोटा द्वारा मंगलाष्टक/महावीराष्टक व देव-शास्त्र-गुरु का स्वरूप, पण्डित प्रवीणजी शास्त्री बांसवाड़ा द्वारा 14 गुणस्थान व पंचभाव, पण्डित अच्युतकांतजी शास्त्री जयपुर द्वारा निमित्त-उपादान विषय पर कक्षाओं का लाभ मिला।

प्रात: 5.30 से प्रौढ कक्षा में पण्डित कमलचंदजी पिड़ावा द्वारा व्याख्यान के पश्चात् जिनवाणी चैनल पर डॉ.भारिल्ल एवं अरहंत चैनल पर गुरुदेवश्री के प्रवचनों का प्रसारण प्रवचन हॉल में ही बड़े पर्दे पर किया जाता था।

सायंकाल बालकक्षा विदुषी शुद्धात्मप्रभा टडैया मुम्बई के निर्देशन में चलाई गई।

शिविर के आमंत्रणकर्ता श्रीमती सुनीता ध.प. श्री प्रेमचंदजी बजाज एवं सुपुत्र तन्मय-ध्याता बजाज परिवार कोटा, श्रीमती मधु गांधी ध.प. श्री वीरेन्द्र गांधी एवं सुपुत्र विवेक गांधी परिवार मंदसौर, श्री संजयजी दीवान सूरत, श्री अजितप्रसाद वैभवकुमार जैन राजपुर रोड़ दिल्ली, श्रीमती शशि सुरेशचंद जैन शिवपुरी, श्री वीरेन्द्रकुमार कनकमाला हरसौरा कोटा, श्री चम्पालाल भभूतमलजी भण्डारी परिवार बैंगलोर, श्री दि.जैन मुमुक्षु मण्डल कोलकाता, श्री निशिकांतजी औरंगाबाद थे।

शिविर में 16 विद्वानों के माध्यम से लगभग 500 साधर्मियों ने प्रतिदिन 16 घंटे तक चलने वाले तत्त्वज्ञान के कार्यक्रमों का लाभ लिया। इस अवसर पर हजारों घंटों के सी.डी./डी.वी.डी. प्रवचन तथा हजारों रुपयों का सत्साहित्य घर-घर पहुंचा। ●

दशलक्षण महापर्व सानन्द संपन्न

सार्वभौमिक एवं त्रैकालिक दशलक्षण महापर्व सम्पूर्ण देश-विदेश में दिनांक 26 अगस्त से 5 सितम्बर तक बड़ी धूमधाम से मनाया गया। पर्व के दौरान सभी स्थानों पर मंदिरों में पूजन-विधान, प्रवचन, प्रौढ़ एवं बालकक्षाओं की धूम रही। लगभग सभी स्थानों पर सायंकाल जिनेन्द्र भक्ति एवं रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रमों के माध्यम से महती धर्म प्रभावना हुई। देश के कोने-कोने से प्राप्त समाचारों को यहाँ संक्षेप में प्रकाशित किया जा रहा है।

● भोपाल (म.प्र.) : यहाँ कोहेफिजा में दशलक्षण महापर्व के अवसर पर तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल द्वारा रात्रि में दशलक्षण धर्म पर प्रवचनों का लाभ मिला।

प्रात:काल कल्पद्रुम महामण्डल विधान का आयोजन पण्डित सुनीलजी धवल द्वारा कराया गया। विधान के बीच में पण्डित अच्युतकांतजी द्वारा जलाभिषेक पाठ पर प्रवचन एवं दोपहर को देव-शास्त्र-गुरु पूजन के आधार पर कक्षा ली गई। रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रमों के अन्तर्गत एनिमेटेड वीडियो दिखाये गये।

क्षमावाणी के अवसर पर मध्यप्रदेश के वित्तमंत्री श्री जयंतजी मलैया तथा भोपाल के महापौर श्री आलोकजी शर्मा द्वारा डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल तथा पण्डित अच्युतकांतजी का सम्मान किया गया। श्री मलैयाजी ने डॉ. भारिल्ल के बारे में कहा कि आप देश-विदेश में जैन तत्त्वज्ञान को सूरज की भांति प्रकाशित कर रहे हैं, आपका प्रवचन सुनकर मैं अपने आपको धन्य अनुभव कर रहा हूँ। श्री अशोकजी शर्मा ने डॉ.भारिल्ल का गुणानुवाद करते हुये कहा कि हमारे हिन्दू समाज में भी कई पण्डित, विद्वान हैं; परन्तु जो वाणी की मिठास, ज्ञान का भण्डार और जैनधर्म को प्रगट करने वाली ज्ञान-ज्योति डॉ. भारिल्ल में है वो देश के किसी अन्य जैन/जैनेतर विद्वान में नहीं।

श्वेताम्बर पर्यूषण में...

श्वेताम्बर पर्यूषण के अवसर पर मुम्बई के चौपाटी सर्किल पर स्थित भारतीय विद्या भवन के विशाल वातानुकूलित हॉल में डॉ. भारिल्ल के विभिन्न विषयों पर व्याख्यान हुये। एक-एक व्याख्यान बालकेश्वर स्थित कमला हॉल में एवं भूलेश्वर में भी हुये।

● जयपुर-टोडरमल स्मारक भवन (राज.) : यहाँ दशलक्षण महापर्व के अवसर पर श्री टोडरमल स्मारक भवन में प्रात: दशलक्षण विधान के उपरान्त पण्डित शांतिकुमाजी पाटील द्वारा प्रवचनसार पर प्रवचन, दोपहर में छात्र प्रवचन एवं श्रीमती कमलाजी भारिल्ल द्वारा छहढाला पर कक्षा, सायंकाल जिनेन्द्र भक्ति एवं रात्रि में पण्डित अरुणजी शास्त्री द्वारा समयसार व कु.प्रतीति पाटील द्वारा दशलक्षण धर्म पर प्रवचन हुये। तत्पश्चात् उपाध्याय कनिष्ठ, वरिष्ठ के विद्यार्थियों व वीतराग विज्ञान महिला मंडल द्वारा ज्ञानवर्धक सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन हुआ।

सुगन्ध दशमी के दिन अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन जयपुर महानगर, टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धांत महाविद्यालय एवं वीतराग-विज्ञान महिला मंडल बापूनगर द्वारा

'पश्चाताप' विषय पर आकर्षक झांकी लगाई गई, जिसे जयपुर के लगभग 2000-2500 लोगों ने देखा और उसकी भरपूर सराहना की। विधि-विधान के कार्य पण्डित रूपेन्द्रजी शास्त्री एवं पण्डित जिनेन्द्रजी शास्त्री ने विद्यार्थियों के सहयोग से संपन्न कराये।

● **जयपुर के विभिन्न उपनगरों** में पर्व के अवसर पर जौहरी बाजार स्थित श्री दिगम्बर जैन तेरापंथी पंचायती बड़े मन्दिर में प्रात: डॉ. श्रीयांसजी सिंघई जयपुर एवं सायंकाल प्रोजेक्टर पर डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर के वीडियो प्रवचन, आदर्शनगर स्थित मुल्तान दिगम्बर जैन मन्दिर में पण्डित रमेशचंदजी शास्त्री जयपुर, सी-स्कीम स्थित आदिनाथ दिगम्बर जैन चैत्यालय में पण्डित राजेशजी शास्त्री शाहगढ, सी-स्कीम स्थित सेठी चैत्यालय में पण्डित संजीवजी शास्त्री खड़ैरी, प्रतापनगर में पण्डित मनीषजी शास्त्री 'कहान', श्री दिगम्बर जैन खजांची की नसियां में पण्डित प्रमोदजी शास्त्री शाहगढ, जगतपुरा में पण्डित अनिलजी शास्त्री खनियांधाना, शक्तिनगर स्थित दिगम्बर जैन मंदिर में पण्डित परेशजी शास्त्री जयपुर एवं सिवाड़ मन्दिर में पण्डित शुभमजी शास्त्री द्वारा प्रवचनों का लाभ मिला।

● **द्रोणगिरि (म.प्र.) :** यहाँ सिद्धायतन में महापर्व के अवसर पर ब्र. रवीन्द्रजी 'आत्मन्' द्वारा प्रात: समयसार एवं दोपहर में इष्टोपदेश पर प्रवचन, डॉ.दीपकजी जैन वैद्य जयपुर द्वारा दोपहर में इष्टोपदेश एवं सायंकाल दशलक्षण धर्म पर चारों अनुयोगों की शैली में व्याख्यान, प्रात: ब्र. महेन्द्रजी द्वारा दशलक्षण विधान, तथा रात्रि में छात्रावास के छात्रों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किये गये।

● **औरंगाबाद (महा.) :** यहाँ महापर्व के अवसर पर प्रात: दशलक्षण महामंडल विधान के अतिरिक्त ब्र.सुमतप्रकाशजी खनियांधाना द्वारा प्रात: दशलक्षण धर्म एवं रात्रि में ज्ञानस्वभाव-ज्ञेयस्वभाव विषय पर प्रवचनों का लाभ मिला। इसके अतिरिक्त पण्डित निखिलजी शास्त्री द्वारा दोपहर में पंचभाव एवं रात्रि में पाप-पुण्य व धर्म-धर्मी विषय पर प्रवचन हुये।

● **बेलगांव (कर्नाटक) :** यहाँ दशलक्षण महापर्व के अवसर पर ब्र. अभिनन्दनकुमारजी शास्त्री खनियांधाना द्वारा दोनों समय मोक्षमार्गप्रकाशक एवं समयसार कलश विषय पर प्रवचन, स्थानीय शास्त्री विद्वानों में सोमिल शास्त्री द्वारा क्रमबद्धपर्याय व दशलक्षण धर्म, सुधर्म शास्त्री द्वारा समयसार, मिथुन शास्त्री द्वारा विभिन्न विषय, अक्षय वाडकर शास्त्री द्वारा इष्टोपदेश पर प्रवचन हुये। प्रात:काल 16 कारण भावना पूजन एवं लघु शांति विधान और रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रमों का भी आयोजन हुआ।

● **दिल्ली :** यहाँ आत्मार्थी ट्रस्ट में दशलक्षण पर्व के अवसर पर ब्र. जतीशचंदजी शास्त्री द्वारा प्रात: छहढाला की कक्षा एवं समयसार पर प्रवचन, पण्डित अनुभवजी शास्त्री कानपुर द्वारा प्रात: समयसार एवं रात्रि में दशलक्षण धर्म पर प्रवचन, प्रात: दशलक्षण मंडल विधान व योगसार विधान का आयोजन हुआ एवं उनका अर्थ भी बताया गया। इसके अतिरिक्त प्रात: गुरुदेवश्री के सी.डी. प्रवचन, दोपहर में आत्मार्थी बालिकाओं और स्थानीय विद्वानों द्वारा प्रवचन, सायंकाल जिनेन्द्र भक्ति एवं रात्रि में बालिकाओं द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम हुये।

● **छिन्दवाड़ा (म.प्र.) :** यहाँ दशलक्षण महापर्व के अवसर पर आदिनाथ जिनालय में प्रात: गुरुदेवश्री के सी.डी. प्रवचन के उपरान्त डॉ. उत्तमचंदजी सिवनी द्वारा समयसार,

पण्डित राजेन्द्रकुमारजी जबलपुर द्वारा प्रात: समयसार एवं रात्रि में दशलक्षण धर्म पर प्रवचनों का लाभ मिला। दोपहर में जयपुर से पधारे पण्डित ज्ञायकजी शास्त्री उदयपुर द्वारा आदिनाथ जिनालय में मोक्षमार्गप्रकाशक एवं पार्श्वनाथ जिनालय में नयचक्र की कक्षा ली गई। प्रात: दशलक्षण मंडल विधान पण्डित सचिनजी, पण्डित ऋषभजी, पण्डित विवेकजी आदि स्थानीय विद्वानों द्वारा कराया गया। इसके अतिरिक्त डॉ.उत्तमचंदजी एवं पण्डित राजेन्द्रजी द्वारा ब्र.केशरीचंदजी धवल के साथ तत्त्वचर्चा भी हुई।

● **सोनागिर (म.प्र.) :** यहाँ तलहटी स्थित कुन्दकुन्द नगर में महापर्व के अवसर पर पण्डित ज्ञानचंदजी विदिशा द्वारा मोक्षमार्गप्रकाशक, पण्डित राजकुमारजी गुना द्वारा समयसार एवं विदुषी जीनलबेन देवलाली द्वारा नियमसार व पंचपरावर्तन विषय पर व्याख्यानों का लाभ मिला। इसके अतिरिक्त डॉ. मुकेशजी शास्त्री 'तन्मय' द्वारा नियमसार परमागम विधान कराया गया। साथ ही गुरुदेवश्री के वीडियो प्रवचन प्रोजेक्टर के माध्यम से दिखाये गये।

● **भोपाल (म.प्र.) :** यहाँ ज्ञानोदयतीर्थ में दशलक्षण महापर्व के अवसर पर ब्र.हेमचंदजी 'हेम' द्वारा प्रात: समयसार पर प्रवचन, दोपहर को परीक्षामुख की कक्षा एवं रात्रि में दशलक्षण धर्म पर प्रवचनों का लाभ मिला। गुरुदेवश्री का सी.डी. प्रवचन प्रात: समयसार पर एवं दोपहर को छहढाला पर हुआ। इसके अतिरिक्त पण्डित यशजी शास्त्री कोटा द्वारा प्रात: दशलक्षण मंडल विधान का आयोजन हुआ एवं प्रवचन का भी लाभ मिला।

● **मुम्बई :** यहाँ बोरिवली में पर्व के अवसर पर पण्डित अभयजी शास्त्री देवलाली द्वारा प्रात: समयसार एवं रात्रि में दशलक्षण धर्म व मोक्षमार्गप्रकाशक पर प्रवचनों का लाभ मिला। इसके अतिरिक्त पण्डित संयमजी शास्त्री द्वारा सार समयसार विधान का आयोजन हुआ।

● **मुम्बई :** यहाँ भायन्दर (वेस्ट) मीरा रोड़ स्थित महावीर जिनालय में दशलक्षण महापर्व के अवसर पर डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर द्वारा प्रात: नित्य-नियम पूजन व दशलक्षण विधान का आयोजन हुआ। विधान के मध्य डॉ. संजीवजी द्वारा दशलक्षण धर्म पर मार्मिक उद्‌बोधन के पश्चात् क्रमबद्धपर्याय पर प्रवचन हुये। सायंकाल आपके दो प्रवचन हुये- प्रथम प्रवचन में णमोकार महामंत्र, आत्मा-परमात्मा, छ: द्रव्य, सामान्य गुण, द्रव्यकर्म-भावकर्म-नोकर्म आदि अनेक विषयों पर लाभ मिला। द्वितीय प्रवचन में जैन भूगोल विषय पर सारगर्भित चर्चा की गई। एक दिन युवाओं के लिये विशेष उद्‌बोधन एवं शंका समाधान का कार्यक्रम रखा गया। स्थानीय विद्वान पण्डित वरुणजी शास्त्री द्वारा संपूर्ण मोक्षमार्गप्रकाशक पर प्रश्नोत्तरी का संचालन किया गया। आपके एवं मंगलार्थी केविन शाह के निर्देशन में दो दिन पाठशाला के बालकों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम भी कराये गये। गुरुदेवश्री के सी.डी. प्रवचन एवं सायंकाल जिनेन्द्र भक्ति का भी लाभ मिला। विधि-विधान के समस्त कार्य श्री राजेन्द्रजी गांधी एवं सहयोगियों द्वारा संपन्न कराये गये। **– सुनील शाह**

● **देवलाली-नासिक (महा.) :** यहाँ पर्व के अवसर पर पण्डित वीरेन्द्रकुमारजी जैन आगरा द्वारा प्रात: समयसार, दोपहर में प्रवचनसार एवं रात्रि में मोक्षमार्गप्रकाशक पर प्रवचनों का लाभ मिला। विधि-विधान के कार्य पण्डित दीपकजी धवल भोपाल द्वारा कराये गये।

● **मुम्बई :** यहाँ सीमंधर जिनालय में पण्डित शैलेषभाई तलोद द्वारा प्रात: समयसार

एवं सायंकाल पंचपरावर्तन पर प्रवचनों का लाभ मिला। इसके अतिरिक्त प्रात: जिनेन्द्र पूजन, गुरुदेवश्री के सी.डी. प्रवचन एवं रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रमों का भी आयोजन हुआ।

● **विदिशा (म.प्र.) :** यहाँ किला अन्दर में दशलक्षण महापर्व के अवसर पर प्रात: दशलक्षण मंडल विधान के अतिरिक्त डॉ. राकेशजी शास्त्री नागपुर एवं विदुषी स्वर्णलताजी नागपुर द्वारा प्रात: समयसार एवं रात्रि में प्रवचनसार विषय पर प्रवचनों का लाभ मिला।

● **भोपाल :** यहाँ चौक में दशलक्षण महापर्व के अवसर पर पण्डित अनिलजी शास्त्री भिण्ड द्वारा प्रात: समयसार के कर्त्ताकर्म अधिकार पर एवं रात्रि में दशलक्षण धर्म पर प्रवचनों का लाभ मिला। रात्रि में स्थानीय साधर्मियों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम भी हुये।

● **कोटा (राज.) :** यहाँ रामपुरा में पर्व के अवसर पर ब्र.कैलाशचंदजी 'अचल' ललितपुर द्वारा प्रात:काल समयसार एवं रात्रि में मोक्षमार्गप्रकाशक पर प्रवचन हुये।

● **दिल्ली :** यहाँ विश्वास नगर में श्री दिगम्बर जैन कुन्दकुन्द कहान परमागम मंदिर ट्रस्ट के तत्त्वावधान में विदुषी शुद्धात्मप्रभा टडैया मुम्बई द्वारा प्रात:काल समयसार के आधार पर शुद्धात्मा के स्वरूप पर प्रवचन हुये एवं सायंकाल दशलक्षण धर्म को अपने जीवन में उतारने की प्रक्रिया और स्वरूप पर प्रकाश डालते हुये तत्संबंधी विषय सम्यग्दर्शन, आत्मानुभूति, पांच लब्धि, अध्यात्म के नय और निमित्त-उपादान आदि विषयों को समझाया गया। रात्रि में बच्चों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रमों का भी आयोजन किया गया।**– मंगलसेन जैन (कार्याध्यक्ष)**

● **कलकत्ता :** यहाँ पद्दोपुकुर स्थित श्री दिग.जैन मंदिर में पण्डित शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल जयपुर द्वारा जैनधर्म के विभिन्न सिद्धांतों के आधार पर अत्यंत सरल व सुबोध भाषा-शैली में व्याख्यान हुये; अनेक प्रकार की मिथ्या मान्यताओं का खण्डन हुआ।

आपके व्याख्यानों को सुनकर उपस्थित जनसमुदाय विशेषकर युवा वर्ग अत्यंत प्रभावित हुआ एवं जैनधर्म के प्रति अपूर्व श्रद्धा जागृत हुई। प्रवचनों से प्रभावित होकर अनेक साधर्मियों ने अभक्ष्य भक्षण का त्याग किया एवं स्वाध्याय करने का नियम लिया। इस जिनमंदिर के 11 वर्ष में प्रथम बार इतनी संख्या में तत्त्वजिज्ञासुओं का मेला लगा कि ग्राउण्ड फ्लोर पर टी.वी. स्क्रीन के माध्यम से प्रवचन सुनने की अलग से व्यवस्था की गई। युवावर्ग तो प्रवचनों से इतना प्रभावित हुआ कि प्रवचन के 1 घंटे पहले ही आकर प्रवचन की प्रतीक्षा करता। प्रवचनों को सुनकर लोग इतने प्रभावित हुये कि जो लोग कभी मंदिर नहीं आते थे, वे भी प्रतिदिन मंदिर आने लगे। सभी ने यह प्रण किया कि यदि जिनधर्म इतना सरल व अच्छा है तो क्यों न इसे पूरे विश्व में प्रचारित-प्रसारित किया जाये। इसके लिये अवश्य ही एक अभियान चलाया जाना चाहिये। सायंकाल श्री प्रकाशभाई शाह द्वारा द्रव्यदृष्टि प्रकाश पर प्रवचन का लाभ मिला। विधि-विधान के समस्त कार्य एवं जिनेन्द्र-भक्ति पण्डित विवेकजी शास्त्री इन्दौर द्वारा कराये गये।

● **मेरठ (उ.प्र.) :** यहाँ पर्व के अवसर पर पण्डित पीयूषजी शास्त्री जयपुर द्वारा प्रात: विभिन्न विषयों एवं रात्रि में दशलक्षण धर्म पर प्रवचनों का लाभ मिला। इसके अतिरिक्त बालकों एवं प्रौढों में जैनधर्म के संस्कार जागृत करने हेतु विशिष्ट व्याख्यान का भी आयोजन हुआ।

तीर्थधाम ढाईद्वीप जिनायतन में विराजमान होने वाली
विश्व की सबसे बड़ी स्फटिक मणि की
श्री सीमंधर भगवान की प्रतिमाजी

R.N.I. No. 38278/83 *Postal Regd. No. JaipurCity/421/2015-17*

तीर्थधाम ढाईद्वीप जिनायतन में विराजमान होने वाली पंचधातु की श्री आदिनाथ भगवान की प्रतिमा

सम्पादक :
डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल
शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., पीएच. डी
सह-सम्पादक :
डॉ. संजीवकुमार गोधा
एम.ए.द्वय , नेट, एम. फिल (जैनदर्शन), पीएच.डी
प्रकाशक एवं मुद्रक :
ब्र. यशपाल जैन, एम. ए.
द्वारा पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट के लिये
जयपुर प्रिंटर्स प्रा.लि., जयपुर से
मुद्रित एवं प्रकाशित।

If undelivered please return to -- **Pandit Todarmal Smarak Trust , A-4, Bapu Nagar, Jaipur - 302015**